बालबोधतर्कभाषाप्रदीपविवरणे विवृति

बालबोधनारंभः

[illegible]

श्री गते सत्यनमगवोल

[illegible]

श्रीमिसत्यनमगवालाघाक्त गमन [illegible] श्री बीरजिनगरि
वालाघात गमनिदेव कि ले कर्ज्जुरि वि [illegible]
रनारो नगरि रामद्वेरि रा लेज्जु वा प दि [illegible]
माया वा पा उवि [illegible] पगरि [illegible] मा वा को मनस्य
पगरि [illegible] को वा [illegible] [illegible]
पस्य उपधा रा॥

[illegible] इवका [illegible]
सने

बाबाघातनम मनिदेवपीलेका रजो रिवीपर [illegible]
[illegible]ने [illegible] सर्व

[illegible]

[illegible] बाला ब्रह्मन गर्भ मंदिर [illegible] रि [illegible] बाप दिपन [illegible]
बाला ब्रह्मन गर्भ मंदिर [illegible] रि [illegible]
[illegible] रि [illegible] बाप दिपन [illegible] माया का [illegible]
[illegible] रि [illegible] माता को [illegible] रि

श्री श्री ६ ४

आगमोसायेनम ॥१॥ हिरासोयेजु आरसोयेकमाया सोयेकाव्य
माया सो

बाला ब्रह्मन गर्भ मंदिर [illegible] रि निरंतर
[illegible] ॥ राता ते कागद [illegible] रि [illegible] बाप
दिपन [illegible] ॥ [illegible] जाकन [illegible]
[illegible] तीनो [illegible] ॥

प्रबोध। हिरदो भनुके तमोतो भनुके होमो वरौ पानी
माणिक्यहोके डुहारहोकी माहा क्यावे माहो होवे हार
ये तोहारमि ल्यौ तप्राण मारे को मेरा गला माप्यो
॥१॥

[illegible] तमाद्रा [illegible] ॥ माद्रा [illegible] वि
धा [illegible] जगा [illegible] नि पलक [illegible] कपा [illegible] ॥ वाद
ता [illegible] गाधिन [illegible] कुलपुरि माडोला विजुलि भीवर
[illegible] कार वा [illegible] रि प्रधा [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥॥॥

[illegible]

इहीं संखासुर दैत्य का मन माहि नाना न्यूना काथिया ॥
वा कि दोडिया यावडावने भागथी कि तपारि दिया ॥ नाग
न लेदुनु दैत्य का मुख रिद्या तम न्मा लिया ॥ या ताके
सकोविर ग मनिद्विन्या ब्रमा राड फोरि दिया ॥ ७ ॥ के
सि का इनु वि रमारि भगवान जाहि तहि दीभया ॥ ग्वाल
सि का इनु वि रमारि भगवान जाहि तहि दीभया ॥ ग्वाल
गोपिजाति इन सबे वन माहा गाइन खे लिरह्या ॥ श्रीकृष्ण
गोपिजाति इन सबे वन माहा गाइन खे लिरह्या ॥ श्रीकृष्ण
गोपिजाति इन सबे वन माहा गाइन खे लिरह्या ॥ श्रीकृष्ण

गोपि वाल वालाघात नगम निर्वे वकले कृष्ण
दिवदनिगरि राजा नेगरि हम हे रि सब
दिये न कोई भाव का पाउदे जिज फाग रि
या माना को म नस्य गारि मे कहाँ लि

मनमाहा अंतरगा साभयौन॥ गाव बन्ध गह भनि चीताहि मनमा
अदित गोहमा गई॥ दासला फाई लिहि लोकेन गयिन उग
आनाथि भयि॥ गाय कमर माथि कनमा हि फीप धोरा
हिन॥ २५॥ आफ्रि क्लथि याविचार कैन गया उ गेन तो कि
गया॥ जस्ला जुन्न हुन्नु हुस्का नि कहमा आई ने खोलि रया
॥ जल्या कि फरि माहिला फरकहाहु घानी हुदाभया॥ वग
हुकी गरि उ ई कैन लिथि न जेदगा हुल्भा गया॥ २६॥ कैसा

[illegible] ॥ २८ ॥ जे का
[illegible] ॥ फहिक [illegible] गया
[illegible] ॥ दहि [illegible] ख भ
[illegible] ॥ धि [illegible] त का
[illegible] ॥ २९ ॥ प के
[illegible] ॥ य [illegible]

[illegible] ॥ यो [illegible]
[illegible] ॥ व को
[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ सा [illegible] ल बोल्या को बुद्धि या
[illegible] ॥ [illegible] ग्वालिनी [illegible]

सजे मानि रसा ॥ मुख रोपि आतिला गले सब जाना
कि तब भोगया ॥ ३१ ॥ ग्वाला हन्न जीत कस का सकल
जाई तब खाभया ॥ छिलना का मन सुपले मतो गोन्नि
कि दीमा गया ॥ ग्वालिनी हि व हन आई तन लेहि
हु का भया ॥ फारि युन गया मदुकि हि को ग्वालिनी
हु हु गया ॥ ३२ ॥ जीजी गने गया तब ग्वालिनी हु हु प्रगो

ज सो तका हा ॥ तम्रा पुत्र सु कु हलेला मुकन उ का
ए क्या ताहा ॥ सा रि पो सि री या मट क खो दि या दि
ति हि ना ई लिया ॥ हु षमानी मन भाव गा रि हु ला मा ई ब्यो आगि
कि या ॥ ३३ ॥ जीजी गने गया ग्वालिनी हु हु हु गया घमा
॥ ए क वो रि थी यो त कै स कु ल मा हु ति ये गा उ घमा हा ॥ मा ई
का व बने हु नि कन ता हा से को समा नीभ घा ॥ वीख हु प गा रि
प्र गट कन ग या उ सा ग गई ए ला ॥ ३४ ॥ विश्व हु पज व हु मि

माई का मनमा हात रस मानी गई ॥ सा गमिंत्र पता थी या ह
यमा देखत मुर्थि भई ॥ आंके माई सभत पढमा थी खो
रया कि थी हिन ॥ वि भस्ह पूर सजारि ने मा मा फरि गाक
भाग हिन ॥ ३ ॥ ग्वाल गोके लमा सेम ता गाई घल्ये व
रके मा गया ॥ [illegible] पढमा थी तभग वन [illegible]
वारि मया ॥ [illegible] आई घडा भरि मा
[illegible] आई तवन्मा गया [illegible]

श्रीगणेशायनमः अथ मुक्तमंजरी लिख्यते ॥ अनुक्रमणिका ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] पंपापुरी [illegible] कानन [illegible] थी [illegible] नाथ
ताहा ॥ देखा सुग्रीव ने उठ [illegible] प्रभु हनुमान
वाली को छल हो मन पुरी सब हो तले ई [illegible]
और दे को [illegible] जन मन्या [illegible] रहा [illegible]
ब्राह्मन को लड़की का बने हनुमान आई ती को हन [illegible]
हा ॥ [illegible] मन माहु सब [illegible] रहा
[illegible] सुग्रीव ने [illegible] हनुमान [illegible]
आई ती ॥ ब्राह्मन को लड़की का बने हनुमान आई ती को
हन कहा : आ हन कया मन माहु सब तरह को हेर
हेर हन ताहा ॥ सुग्रीव ने हनुमान लाई जन [illegible]
मदीये आई ती ॥ ब्राह्मन को लड़की का [illegible] हनुमान आ

[illegible] वाला घात नगर में [illegible] के [illegible]
[illegible] गिरि राजा ने [illegible] गिरि [illegible]
दिये न कोई [illegible] का पाजेब [illegible]
[illegible] मान को न [illegible] गिरि [illegible]

इई॥ सखा सुख इति का मन माना जाना चला साथिया॥
वा कि दोड़ि गया वडावन मा गथी कि तपारि दिया॥ नाग
न लोहु नु दैत का मुख करि मात मन मा लिया॥ यो ता के
सको विर गा मानि सिन्या बला राड फारि दिया॥ ३॥ के
सी का इनु वि रमारि भगवान जाहि ताफिर्ही भया॥ क्वास
जाधि जाति इन सबे वन मा हा गा इन खे विर हा॥ अ[illegible]
[illegible] मा सुरमी आइ न ताहि न्हि फिर्ही भया॥ आ घा विमल

मनि सधि हरहकन जदि गोकुल आ गया ॥ ३९ ॥ वकासुर द
ईत्य कामन माहा अतन्त्र गो साभयो ॥ सिस्ले पु सीभई गाकु
अपुरिमा तकाल हर्ई गया ॥ वकुआको रुपालिस सादिनो
नदिने घर्के माषाविर्या ॥ हे श्री भगवान्लाई घलकाबन
मा जादि तजादो भयो ॥ ३९ ॥ तस वकासुरलाई देषि भग
वान अतन्त सुभ्रेरया ॥ तको हो सभनि कुलका सषि
हरहसा देनाजिकमा गया ॥ हे ख्यातसे दुतलाई समाया

हरिवश्रकासुरमा ठहैरया ॥ वकासुरमो तसेस
मयमा वाजिन्त्र गर्दैरया ॥ ४० ॥ अघासुरदिरले जु
तमजमा संकोरामानीर लो ॥ प्रातकालभयो ततिन
माहा जठितजादोभया ॥ गोकुलसबै निजभानमन
मा गमुखवाई जादिगया ॥ गाई हथ्या वलभद्रकस
वनमा देषि ततहिरमा ॥ ४१ ॥ गोकुलनिर सुनि
तथा भई कन मुखवाई हैरया ॥ आयासु वलभद्र कस

वन मा येक जुद्ध ता भिया॥ अ ग्वास्वि र लोभ नि जव
चिन्ता वा हृदि यो मु स्मा हा॥ छाति बुरा गरिम्यो ताहि
न मा हु राजा हृदिया ह स्मा हा॥ ४२॥ अ वा सा थ र को म
तु क जव सुन्यो अठि ह्वा स गेयो॥ तस्ले गर्भ गरि वहु त
गरजे दी मुल क कं प्यो भया॥ जुद्ध ग उभा नि कुन्न का न जिये
मा आई वडा भेरयो॥ न को प्राण हरन्या पुरु स लेवो

गिन्न सं गल भया॥ ४३॥ राजा इन्द्र का मालिनी सवमिलिप्रा
तेगो कुस्मा गया॥ फुल्ल पि सि हि कुस्म का न गरि मा तहि
न्मा फिर्स भया॥ फुल्ल पा सि श्री कृष्ण ले सव लिया ग्वाल
स क स्मार्या॥ ग्वाल नि आई इन्द्र का हुरमा नाल
का युक्ति कहा॥ ४४॥ राजा इन्द्र ले सा ई ब्या हि न मा ह मा
नि न जि क मा रुद्रा॥ वडा को ध गरि नजा के न दिया पुजा
को षण्डि तु हुद्रा॥ फुल्ल पा स न्या वि र क न भयो गाकु ल मा

कृष्ण को जो था॥ गोकुल से पैदा हुई दिन्हु जल लेम को छिवसे
॥६५॥
पुरी॥ वर्ष्यो मेघ गोकुल पुरि वीषयमा सहस्र छिन्ना
॥ अकास वान्न विशलि वहुता रज्ञ मुलु कमाहा हापी॥
अन्ने धुन्द भयो गोकुल व वा प्राप्ति पुकार्थी हरि॥ गो
वर्धन पर्वत वर्ष्यो छिन माहा कृष्ण प्रत ज्ञा मेमा हा॥६६
पंछि कित पतंग सव जाना सवै गोकुल मा सम्या॥ कजौरि सिरि
कृष्ण का चरन मा जाई त विन्ति गया॥ धन्ये हो भगवान प्रसं

भकन हो ऽ राडो त्र्या मे वसा॥ आकै कृष्ण प्रगट भया भनी
पुस्या राजा सरन्मा पस्या॥६७॥ जो थिजा वुल्ल लोक मो मुनि हर
नन्ले प्रत ज्ञा मया॥ प्रातःकाल गया गोकुल पुरि मा वाछास
वेका हुमा॥ सन्न ज्या काल हुदात से समये मा गाई त रास्ते ग
या॥ वाछ्ये कन हुदा वज्ञ विरहले पीत मुर्छा भया॥६८॥
गाई एम थ्या वन मा वज्ञ विरहले अघोर सद्दे गरि॥ वाज्ञ
गथ्यो निसी रत का विच मा हा सम्पुरो जै गम्भीर॥ ब्रमा को

छलहोभनिजवकुश्या-प्रीतिप्रतीमागला॥कुसमेनश्रिसिरि
कलनलेजपगमावाशवन्माष्टसर्थारि॥४८॥ऊन्हकावीहि
याजातिअधिथीयातसेखरकाभया॥गाइरामथामधव
नविषेखरकमावाछापछा८दैगया॥गोवाछुसभरी
बहुतमनमाहूयाईसमारला॥वाछासेगरघवगहरकलेप
किंतगोठमागया॥५०॥ब्रम्हाकामनमावीर्यकिनगमो-वीसमा
गपहीमाणे॥वाछाकोतविजोकभयोदिनदिने-सकलछेनम

ताहा॥सोहमापरलामनिरीषिहरहनाएन्यूकाथीवाहा॥
वाछावोकिगयागोकुलनगरीमा-विनीतगथीताला॥५१॥
विद्यासंहगंधमधनमोगनुष्पाडनप्यात॥
सपवाहिधनकोपयोतबहुलोविद्ये

तामोबो। —२।:४
बलाव —२
[illegible] —७

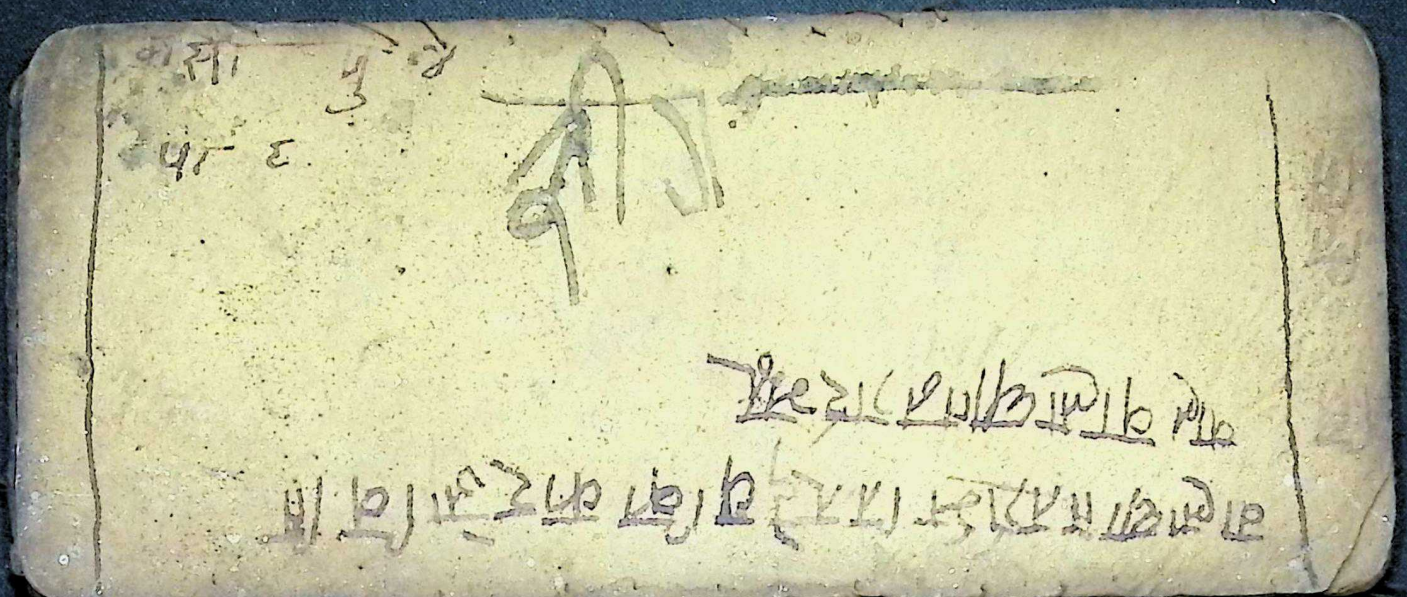

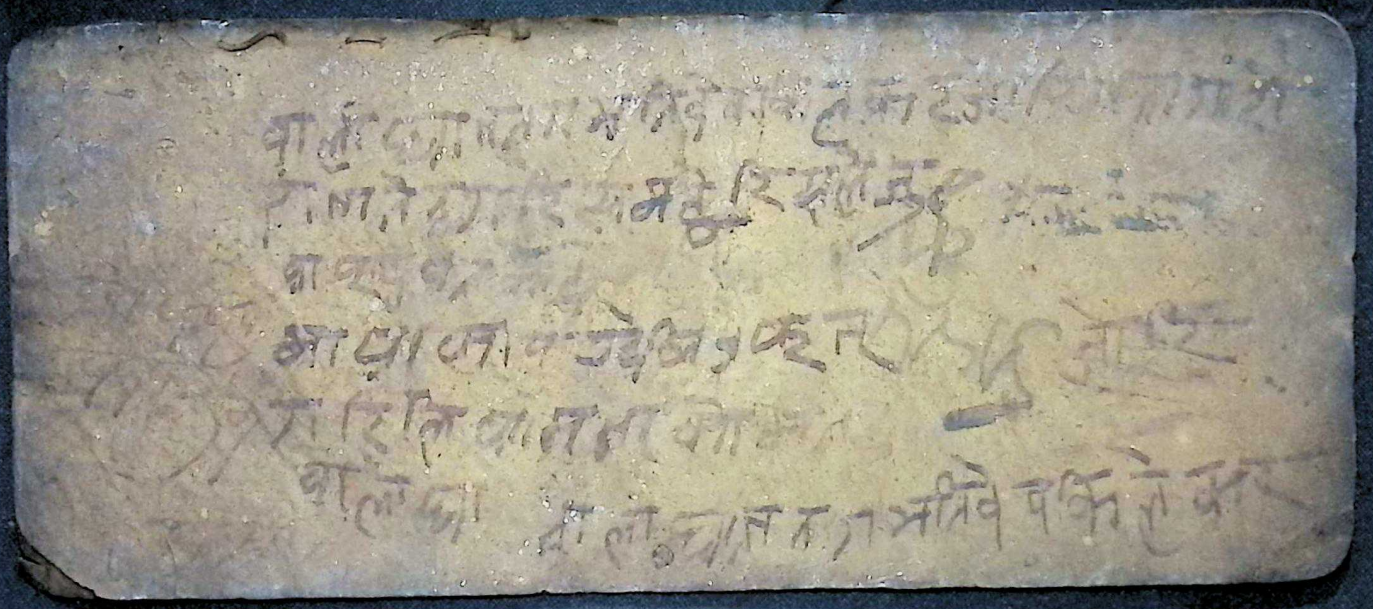

श्री गणेशाय नमः बालाघाट नगर श्री महादेव की ले [illegible]

[illegible]

[illegible] श्री रघुनाथाय नमः ॥ [illegible] मुख मई गई [illegible] हनुमान [illegible]
[illegible] आज [illegible] मुनी ॥

[illegible] श्री लक्ष्मी गणपति [illegible] पत्नी [illegible]
[illegible] रघुनाथाय

बालाघाट नगर महादेव की ले
करोड़ि [illegible] यात्रा
[illegible]

मुलकमा विमा तमा दैरहा: अ प्रकास दिषि कि ला ता छि
नमा हा ना रान्ग कुल भागया ॥ उ प्रो सब गी त्रिनाथ तम मा
सब जा ई हर्षी भया ॥ क कासर भया भनि गा कुलमा वा जिन्न गई रहा
२१ ॥ सीत सब दुनि तरास मजल माई तजदि गई न ॥ दखिन विर
त्रिनावर्त कोमत्तु कीजि मीमा आस उपमानी रहि न ॥ शीको काभग
वान ऊ आई न तनेलन त्रैमा हर्षि भई न ॥ सातो नरह गया भनि वी
वाकि न गरिन ब्रह्म मुनि ओ गयि न ॥ २२ ॥ ब्रह्मा आई न मा

लीलाट हरि का विस्तार गर्दी भया ॥ नाना सास्त्र मा वि वाकि न ग
मा सातो गयो का कहा ॥ अस्तो अक्षर मंत्र का फलि तल सातो
ला ऊ दा भया ॥ आ सि वो तम गरि वा मुनि हरु वैकुंठ मा गया ॥
२३ ॥ का हि यदि न मा मा ई जसा मति जस ना कि दा मा गई न ॥ अ
हा न गरि न्ता गज अभारि न तेहि न मा फि दि भई न ॥ यो औ
श्री कृष्ण को घ्रमा हा ऊ ई कमानि न ॥ भाग जुरो भया का द
रि वन्न न मा क्या ई ह्य तो कि न ॥ २४ ॥ यो औ सब देव मा ई का

गाल्या माना का मन्त्र पुरगारि ॥ ६ ॥ आ मा लान्न
लि द्धि तत्ति द्धि न मा ह्ना ॥ ६ ॥ प्रथो ऽ त्र घारि ॥ ७ ॥ माय
द्वि थी न्न जगत्र जन निपत्त कभी क्या हिन्न ॥ वा ह्न गो
गयि न्न गो क लपुरिमा ज्वाला स्वरूपि भयि न्न ॥ अ का स
वान गरिप्रचास क न गाहिन्न उत साहा गई गयि न्न ॥ त
का ल प्रयोगो कुल पुरिमा यहो प्रतै या कहिन्न ॥ ७ ॥

ज्ञा क स फिरन्नो व ज्ञा कठिन्ने ले मुर्ती मना के गन्या ॥ य स्त
व भयो अरि ब्रजन ले अ का ल मन्त्र पारि ॥ ज्ञा को मा
प निह्न क्ष र क न भयो प्रस्थान गन्या उस घारि ॥ वा व
रुप्र जाति हिन्नो क लपुरिमा मार्ग तत्त हिन्न घारि ॥ ८ ॥ दियो अ
सन्नौ सब मुलकमा तया भई सब हा ॥ जो थिया जाति कै सका हि

मा ८ से चारि सर्व ॥ ॥ बोज्ञ ग थो नि सीरात का विय मास कत्ती का
भया ॥ वालष्ट पजति कंस का मुलुक मा सबै सकल मार हा ॥ भा
नुक्रि निप गट भया गोकुलपुरि मा उठि न्रजसो दाता हा ॥ हासि मुख
गरिवज हरकले हरि न्सुपेदा भाई ॥ ६ ॥ देषि न्स हरि का लिलाट मन
को मकुट्य या को ता हा हासि मुख गरि मुखार विन्द विषय मा चुम
न लगा इन ता हा ॥ इद्धि कुल वड्यो भनि जसु मति न्रतन प्रसरहि

रु एष मा मन मा विचार कन गरि न्ब्रह्मा मनि ध्यो गई न्न ॥ कंजो
कन ब्रह्मा का हुर मा विस्तार गदि भई न्न ॥ भरि प्रेम गरि सा वि
त्त मन न्ते पुत्रै भया को कहि न्न ॥ ब्रह्मा आई व स्या गोकुलपुरि मा स
सुर्ग सत्या न्न हा ॥ नाना सास्त्र मा हा विचार कन गया श्री कृष्ण
श्रोता भया ॥ १२ ॥ अन्न त्रैया न गरि अभि न्तर भन्या सब भया
कुटुम्बा ॥ नामे कर्म गरि वज हरकले वाजित्र मंगल भया ॥ वाजा

तालमृदंग संखमुरलीभेरि बिनावासुरि भई मुकरनाटक हा
ल ग्यालिन गरा तबल बिनावेजारि पियकतार सितारि जिनाटो
लकि रागित रंगि जाति ॥ श्रीपंचहरि कोचुवा रेहुदा बाजा
ल्यानोमति ॥१२॥ कंसासुर दईन्यकामन माहा आनंदवरत्य
लभया ॥ सुनी सोकगरि सदादिनादिनेवहुमलिन्भेरखो
देखो क्यादिलवेबोलायोपतनासमुरतिविसा कियो ॥ षाती

ग्राम सुनीवजाहरकलफेरिदयो रेमयो ॥१४॥ आयित्योप
तनागोकुलपुरिमा मानवस्याकाजाहा ॥ हासिमुखवारि
पुपकनवसिकोहिथीयेनन्ताहा ॥ पिषलाईहुदमाअभि
नरगरिदगाप्यारिमन्माहा ॥ हुसायागरिलेन्यारिप्रजन
लाईमारिदियाहिन्माहा ॥१५॥ छलित्योपुतनाजीतो
लमाहाअघोरसवदेगरि ॥ तखोप्राणछुयोतताहिन

तालमृदंग सरस्वमुरलीभेरि विनावासरि ॥ ॐ मुकरनालकहा
ल ज्यालिनगरा तबलविनावेजरि ॥ एकतारसितारगिजाडो
लकिरगित रंगिजाति ॥ श्रीपन्नहरि कोनुवा रनहुदावाजाव
ल्यानोमति ॥१२॥ कसासुरदईत्यकामनमाहाअतनावरत्य
लभया ॥ सुतीसाकगरिसदादिनादिनेवहुमलिन्भेरहो
देखोक्यादिलेवोलायोपतनासमुरीविस्ताकेथो ॥ षाती

ग्रामसुनीवजाहरकलाफेरिदवीदेयो ॥१४॥ आयित्योप
तनागोकुलपरिमानरनवस्याकाजाहा ॥ रासिमखवारि
थुपुकनवसिकोहिथीयेनताहा ॥ पिघलाईहुदमाअभि
न्नरगारिदगाध्यारिमन्नाहा ॥ हुआयारिलेन्यारिसुजन
लाईमारिदियाछिन्नाहा ॥१५॥ छलित्योपुतनाजीतो
लमाहाअघोरसवहैगरि ॥ तसोप्राणहुयोतनाछिन

बाला घाम कर्म भरत देव किले वार जो रि बिनी
गरि ॥ राम तेज गरि ह्यमेंहु रि हले जुव दिये
र को हि ॥ माया का पाउ देव छिज फल गरि
लिखो मा ता को म ह्यु गरि

कहि एक दीन मथुरापुर नगर मांझी क
स्त्रैता भया॥ ये दोउ क्रगदावन मुन
ते बीपय मापा उपदा मकाथी यापीला
ते ईन को मुकुट कान घ पाव का
ईन दीया॥ दे दीया श्रीव सुदेवले व
न दि या॥ इसी सी गप का पवद
बीयनखाव

लाखि श्री सबो प मा जो गपा ई माहि ध महपुरा गा हि ब
गहि राना नेगरिय पालपालन गम तर्ज वदीले कर जीवी

अपारसीमारयुक्त कृपालु दुखोद्धारन कुछ मनाई नाथाडो
कृपा ते आहिलो नाथ बताऊ भक्ति ज्ञान आहि बताऊ

श्रीगणेशाय नमः श्रीगुरवे नमः

३६

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents containing the personal colleciton of Jagannath Bhattarai ji from Kathmandu, Nepal.

CV:

Jagannath Bhattarai
Date of Birth: 31 December 1960
Place of Birth: Kathmandu, Nepal
Address: Nagarjun (Ramkot), Kathmandu

Educational Qualifications
Bachelor of Science (B.Sc.) – Major in Biology
Master's Degree – Sociology & Anthropology
Shastri (Ongoing) – Balmiki Vidyapeeth

Professional Experience
Government School Teacher (Madhyamik Pratham Shreni)
Taught at Secondary Level (Madhyamik)
Taught at Higher Secondary Level (Uchcha Madhyamik)
Served as Head Teacher
Led academic and administrative development
Strengthened institutional performance and student outcomes

Areas of Interest
Sanskrit Vyakaran
Spiritual & Philosophical Studies
Educational Leadership

Digitization by eGangotri Trust
Funding by MIDF, New Delhi